उत्तराखंड वन विभाग शोध क्षेत्र के कर्मचरियों के लिए एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम

"हिमालय की महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों की उच्च गुणवत्ता वाली पौध तैयार करने के लिए आधुनिक नर्सरी तकनीके"

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला, 22 से 26 अक्तूबर 2018

हि० व० अ० स० शिमला में उत्तराखंड वन विभाग के अनुरोध पर उत्तराखंड के शोध क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए **"हिमालय की महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों की उच्च गुणवत्ता वाली पौध तैयार करने के लिए आधुनिक नर्सरी तकनीके"** विषय पर हि० व० अ० स० शिमला में 22.10.2018 से 26.10.2018 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तराखंड वन विभाग के 10 अधिकारियों जिनमे सहायक अरण्यपाल , वन परिक्षेत्र अधिकारी, वन दारोगा , वन रक्षक शामिल थे , ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन 22.10.2018 को किया गया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ **डा० संदीप शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक** ने संक्षिप्त परिचय के साथ किया। उन्होने मुख्य अतिथि और उत्तराखंड वन विभाग के अधिकारियों का स्वागत करते हुए पाँच दिनों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होने बताया कि एस कार्यक्रम के दौरान आधुनिक नर्सरी तकनीक से उच्च गुणवत्ता वाली पौध तैयार करने के विभिन पहलुओं पर विभिन्न संस्थानो से आए विष्य-विशेषज्ञ अपनी प्रस्तुति देंगे तथा अपने विचार सांझा करेंगे। उन्होने बताया कि प्रतिभागियों को नर्सरी और अल्पाइन वनो के क्षेत्रीय भ्रमण पर भी ले जाया जाएगा जिससे उनके व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि होगी।

डा० संदीप शर्मा, कार्यक्रम समन्वयक

डा० वि० पी० तिवारीमुख्यातिथि का स्वागत करते हुए

डा० वि० पी० तिवारी, निदेशक हि० व० अ० स० ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **श्री अजय कुमार लाल, भा० व० से०, अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल (शोध), हिमाचल प्रदेश वन विभाग** का स्वागत किया साथ ही मुख्य अतिथि को अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालने के लिए धन्यवाद दिया। डा० तिवारी ने प्रतिभागियों को संस्थान व संस्थान द्वारा वानिकी शोध , शिक्षा एवं प्रसार के क्षेत्र में किए जा रहे नवीनतम कार्यों के विषय में संक्षेप में बताया। उन्होने प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों का स्वागत किया व इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के आयोजन के लिए हि० व० अ० स० शिमला को चुनने पर उत्तराखंड वन विभाग का धन्यवाद किया।

मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार लाल, भा० व० से०, अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल (शोध), ने अपने उद्घाटन सम्बोधन में बताया की वन अधिकारियों और अग्रिम श्रेणी कर्मचारियों का मुख्य कार्य वृक्षारोपण और नर्सरी पौध तैयार करना है परंतु वांछित प्रजातियों का उच्च गुणवत्ता वाला नर्सरी तैयार करना हमेशा ही चुनौती रहा है। इसलिए इस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम जो विशेष रूप से आधुनिक नर्सरी तकनीक से कि उच्च गुणवत्ता की पौध तैयार करने पर केन्द्रित है, आज के परिपेक्ष्य में बहुत ही प्रासंगिक एवं आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा कि वानिकी एक लम्बी प्रक्रिया होती है, जो आज हम करते हैं, उसके परिणाम कई दशकों के बाद मिलते हैं। इसलिए, जंगल की उत्पादकता बढ़ाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले पौधों का ही रोपण होना चाहिए। उन्होंने हिमालयन वन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की प्रशंसा करते हुए कहा कि संस्थान वानिकी शोध में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है तथा ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए संस्थान के पास अनुभवी शोध कर्मचारी है। उन्होने आशा व्यक्त कि यह प्रशिक्षण कार्यकरम निश्चित रूप से अधिकारियों के ज्ञान में वृद्धि करेगा और अंततः समाज को लाभान्वित करेगा।

डा० वि० पी० तिवारी, निदेशक

श्री अजय कुमार लाल, भा० व० से, अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल (शोध)

डा० संदीप शर्मा, वैज्ञानिक- जी एवं प्रशिक्षण समन्वयक ने इस अवसर पर औपचारिक रूप से धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उन्होने श्री अजय कुमार लाल, भा० व० से० अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल (शोध) का अपना महत्वपूर्ण समय देने और समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए धन्यवाद दिया।

पाँच दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम में हि० व० अ० स०, शिमला, राज्य वन विभाग, विश्वविद्यालय से आए हुये प्रतिनिधियों ने आदर्श नर्सरी कार्यप्रणाली, आधुनिक नर्सरी तकनीक, गुणवत्ता रोपण पौध जैसे विभिन्न पहलुओं पर जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न विषयों को शामिल किया गया जैसे: आधुनिक नर्सरी तकनीक और उत्पादकता बढ़ाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली नर्सरी पौध तैयार करना ; बीजों का एकत्रण, भंडारण, प्रसुप्तावस्था और बुआई से पहले उपचार ; वन नर्सरी में रोग और उनका प्रबंधन ; बीज़ प्रौद्योगिकी और जूनीपेरस पोलीकारपस की कृत्रिम पुनर्जनन तकनीक ; विविधता व ग्रामीण आय में वृद्धि के लिए- औषधीय पौधो का अंतर फ़सलीकरण ; हरड़, भेडा, आंवला व रीठा की बेहतर नर्सरी तकनीक ; डिज़ाइनिंग, लेआउट, डाटा रिकॉर्डिंग, कंपाइलिंग, वानिकी

प्रयोगो का डाटा विश्लेषण; कार्बनिक खेती- कमपोस्टिंग और वर्मी कमपोस्टिंग तकनीक ; उत्पादकता बढ़ाने तथा उच्च गुणवत्ता वाला स्टॉक तैयार करने में वृक्ष सुधार की भूमिका ; शीत मरुस्थल की महत्वपूर्ण प्रजातियों व शंकुधारी पौधो की नर्सरी तकनीक; पोलोनिया-एक बहु-उद्देशीय पौधा; हिमालय क्षेत्र में वाटरशेड प्रबंधन; नर्सरी में कीटों का प्रबंधन; ग्लोबल पोजिसनिंग सिस्टम (जीपीएस)- एक परिचय ; वन और जैव- विविधता के लिए पहाड़ों के मायने ; लेंटाना से प्रभावित जंगले का पुनर्वास ; वन और जंगल को मापना।

डा० कमल शर्मा- मुख्य वैज्ञानिक अपनी प्रस्तुति देते हुए

श्री हितेन्दर शर्मा, हि ० प्र० व० से०

श्री संजीव कुमार ठाकुर, हि ० प्र० व० से०

डा० राजेश शर्मा, वैज्ञानिक- जी

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों को हि० व० अ० स० की शिलारू रिसर्च नर्सरी दौरे पे ले जाया गया जहां उन्होने हि०प्र० के वन विभाग के अग्रिम श्रेणी कर्मचारियों के साथ बातचीत की। प्रतिभागियों को अल्पाइन चरागाह हाटू भी ले जाया गया जहां रास्ते में उन्हे विभिन्न औषधीय पौधों की जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को हि० व० अ० स० की शोध प्रयोगशाला व भारतीय उच्च अध्धयान संस्थान ले जाया गया साथ ही उन्हे शिमला के देवदार के जंगलों में भी ले जाया गया जहां उन्हे जीपीएस की जानकारी दी गयी।

शिलारू नर्सरी का क्षेत्र भ्रमण व हि०प्र० के वन विभाग के अग्रिम श्रेणी कर्मचारियों के साथ बातचीत

प्रशिक्षुओं का हि० व० अ० स० की शोध प्रयोगशालाका दौरा

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता **डा० वि० पी० तिवारी,** निदेशक हि० व० अ० स० शिमला ने की। प्रतिभागियों ने स्वतंत्र रूप से बातचीत की और अपने अनुभव सांझा किए। श्री आर० सी० कंडपाल , सहायक अरण्यपाल ने बताया प्रशिक्षण कार्यक्रम काफी रोचक और जानकारीपूर्ण था। उन्होने प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए आयोजकों का भी धन्यवाद दिया। प्रतिभागियों ने कहा के वे यहाँ सीखी गयी तकनीकों को निश्चित रूप से लागू करेगें जिससे उन्हे वांछित प्रजातियों का गुणवत्ता वाली नर्सरी पौध उगाने मे सफलता मिलेगी। कार्यक्रम के अंत में डा० वी० पी० तिवारी , निदेशक हि० व० अ० स० ने प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

डा० संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी एवं पाठ्यक्रम समन्वयक ने औपचारिक रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उन्होनें श्री अजय कुमार लाल , भा० व० से० , अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल (शोध) का उदघाटन समारोह का निमंत्रण स्वीकार करने के लिए; विशेषज्ञों का प्रशिक्षण के दौरान व्याख्यान देने के लिए और उत्तराखंड के अधिकारियों का बढ़ चढ़ कर भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होने डा० वि० पी० तिवारी , निदेशक हि० व० अ० स० का प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान आयोजक टीम का मार्गदर्शन करने व प्रेरित करने के लिए धन्यवाद दिया जिनके सक्रिय और समर्पित प्रयासो से प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सका।

****

प्रशिक्षण कार्यक्रम की कुछ झलकियां

Himalayan Forest Research Institute, Shimla (H.P.) -171013

ek Training Programme for the Officials of Uttarakhand Forest Department
on
rn Nursery Techniques for Raising Quality Nursery Stock of Important
Himalayan Forestry Species"
22-26 October, 2018
Organized by
Himalayan Forest Research Institute, Shimla (H.P.) -171013

One week Training Programme for
"Modern Nursery Techniques for

One week Training Programme for the
"Modern Nursery Techniques for Ra
Himalayan
22-26

मीडिया प्रकाशन

उत्तराखंड के वन अधिकारियों को ट्रेनिंग दे रहा एचएफआरआई

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान उत्तराखंड वन विभाग की सिफारिश पर उनके अधिकारियों को हिमाचल की महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों की उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने के लिए प्रशिक्षण दे रहा है। सोमवार से शुरू हुए चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कर्मचारियों को आधुनिक पौधशाला तकनीक से अवगत कराया जाएगा। प्रशिक्षण में उत्तराखंड वन विभाग के सहायक वन संरक्षक, वन क्षेत्राधिकारी तथा वन दरोगा स्तर के 10 अधिकारी भाग ले रहे हैं। पहले दिन के दौरान हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी, एपीसीसीएफ शोध अजय कुमार समेत कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

अमर उजाला, 23.10.18

****